एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आँगन में मुर्गीपालनः परिवार का सुनियोजित पोषण

(*भव्या पाल, दशरथ सिंह चुण्डावत एवं केशराम मीणा)
पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: palbhavya2308@gmail.com

मुर्गी पालन में मुर्गियों को आंगन या घर के पिछवाड़े में पड़ी खाली जगह में आसानी से पाला जा सकता है। इसमें आप देसी मुर्गियों का चयन कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। ये मुर्गियां आहार के रूप में हरे चारे और घर की बची फल–सब्जियों के छिलके अनाज, खरपतवार के बीच दाने और कीड़े मकोड़े आदि खाकर अपना जीवन यापन कर लेती हैं। लेकिन अधिक उत्पादन के लिए इन मुर्गियों को कुछ अतिरिक्त आहार की भी आवश्यकता होती है। इसलिए उनको मक्का, बाजरा, चावल खली आदि दिया जाना चाहिए। इन्हे अंडा देने के दिनों मे अच्छी शेल की क्वालिटी के लिए शैल ग्रिट अथवा मार्बल के छोटे छोटे टुकड़े प्रतिदिन 5–6 ग्राम पक्षी देना चाहिए। मुर्गी पालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक मजबूती दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

आँगन में मुर्गी पालन के फायदे

1. इसके लिए बहुत कम जगह, श्रम एवं लागत की आवश्यकता होती है।
2. यह गाँव के लोगों को फसल की बर्बादी या अन्य आपात स्थितियों मे अतिरिक्त आय प्रदान प्रदान करता है।
3. यह बच्चों एवं औरतों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
4. यह अवशिष्ट पदार्थों जैसे रसोई अवशिष्ट कीड़े मकोड़ो को उच्च प्रोटीन वाले अंडे एवं मांस मे बदलकर खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
5. मुर्गी से प्राप्त खाद भूमि के लिए उपजाऊ होती है।
6. यह ग्रामीण परिवेश मे आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है।

आँगन में मुर्गी पालन की प्रमुख विशेषताएँ

1. इनका प्लुमेज अर्थात पंख आकर्षक रंगीन होना चाहिए।
2. इनमे प्रतिकूल परिस्थितियों मे भी बढ़ने की क्षमता होनी चाहिए।
3. मुर्गियों मे ब्रूडीनेस नहीं होनी चाहिए।
4. इनके अंडे तथा मांस का स्वाद, सुगंध, रंग एवं पोषक तत्व देशी मुर्गी के समान होना चाहिए।
5. इनके मांस मे वसा की मात्र कम होनी चाहिए।
6. इसमे बीमारी प्रतिरोधक क्षमता होनी चाहिए।
7. इनका वजन आठ सप्ताह मे कम से कम एक से दो किलोग्राम होता है ।
8. मृत्यु दर आठ सप्ताह की उम्र तक कम होनी चाहिए।
9. अंडे की हैचेबिलिटी अच्छी होनी चाहिए।

आँगन में मुर्गीपालन के लिए उपर्यक्त मुर्गीयों की नस्लेः

नस्ल	प्रकार	विकसित करने वाला संस्थान
वनराजा	अंडा एवं मांस	कुक्कुट शोध निदेशालय , हैदराबाद
कैरी देवेन्द्रा	अंडा एवं मांस	सी ए आर आई, इज्जतनगर
कैरी गोल्ड	अंडा एवं मांस	सी ए आर आई, इज्जतनगर

गिरिराजा	अंडा एवं मांस	K V A F S U बंगलुरु
निशबारी	अंडा एवं मांस	सी ए आर आई, पोर्टब्लेयर
ग्रामप्रिया	अंडा	कुक्कुट शोध निदेशालय , हैदराबाद
कैरी निर्भीक	अंडा	सी ए आर आई, इज्जतनगर
कैरी श्यामा	अंडा	सी ए आर आई, इज्जतनगर

पक्षियों का टिकाकरण

बीमारी का नाम	उम्र (दिन मे)	डोज	रूट
मरेक्स	1	0-20 मि. ली.	खाल मे
रानीखेत (लासोटा)	7	एक बूंद	आँख मे
गम्बोरो	14–18	–	पीने के पानी मे
रानीखेत (लासोटा)	28	एक बूंद	आँख मे
रानीखेत(आर टु बी)	70	0-50 मि. ली.	आँख मे